

---

# Kumbhatakakritam Shiva Stotram

——  
कुम्भाटककृतं शिवस्तोत्रम्

——  
Document Information



---

Text title : Kumbhatakakritam Shiva Stotram

File name : kumbhATakakRRitaMshivastotram.itx

Category : shiva, tAmraparNImAhAtmya, stotra

Location : doc\_shiva

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : tAmraparNImAhAtmya | adhyAya 48/55-66||

Latest update : December 13, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 13, 2025

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Kumbhatakakritam Shiva Stotram

---

### कुम्भाटककृतं शिवस्तोत्रम्

---



तुष्टाव परमेशानं धर्मं धर्मभृतां वरः ।  
कुम्भाटक उवाच ।  
नमो नमस्ते लोकानामादिकर्त्रे महात्मने ॥ ५५ ॥  
धर्माकाराय साराय श्रुतीनामात्मने नमः ।  
त्वां भजन्तस्तथा भक्त्या स्तुवन्ति त्वां सुरासुराः ॥ ५६ ॥  
ध्यायन्ति योगिनः स्वान्ते त्वामेव च परात्परम् ।  
त्वत्कृपालोककण्डिकाभामात्रेण जन्तवः ॥ ५७ ॥  
जगत्क्षोभयितुं कर्तुं त्रातुं पटुतरो भवान् ।  
त्वन्मुभान्निर्गता वेदा भर्यादां व्यक्तयन्ति ते ॥ ५८ ॥  
तेषु तेषु च वर्तन्ते त्वदाज्ञागौरवाय ते ।  
येषां त्वं विमुग्धो देव ते वै सीदन्ति सर्वदा ॥ ५९ ॥  
त्वदालम्बनयोगेन सिद्धयोऽष्टौ न संशयः ।  
अैडिकामुष्मिकौ मार्गौ त्वत्सृष्टौ लोकलेतवे ॥ ६० ॥  
नमः पूर्वाय पूर्वाणां पुरुषाय महात्मने ।  
वृषाय वृषरूपाय वेदरूपाय ते नमः ॥ ६१ ॥  
त्वच्छक्त्या धार्यते सर्वं त्वल्लीलाकलनात्मकम् ।  
त्वं विष्णुस्त्वं शिवो ब्रह्मा त्वं मित्रो वरुणो यमः ॥ ६२ ॥  
त्वं गुणैस्त्रिगुणाभिष्यां बिभर्षि कलय सवया ।  
प्रसीद देवदेवेश प्रसीद परमेश्वर ॥ ६३ ॥  
नमो नमः कारुणकारणाय ते कलाविशेषैः कलिताभिलात्मने ॥ ६४ ॥  
प्रसीद विश्वेश्वर विश्वमूर्ते प्रसीद देवेश ध्यासुधानिधे ।  
धृति स्तुत्वा स कुम्भाटो भक्त्या परवशो मुहुः ।

प्रणाममकरोत्तस्मै दण्डवत् पुरतो विभोः ॥ ६६ ॥

एति ताम्रपर्णीमाहात्म्ये ४८-अध्यायान्तर्गतं

कुम्भाटकृतं शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

ताम्रपर्णीमाहात्म्ये । अध्याय ४८/पप-६६ ॥

tAmraparNImAhAtmya . adhyAya 48/55-66..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Kumbhatakritam Shiva Stotram*

pdf was typeset on December 13, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

